।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : **jstsdgh01565@gmail.com**

महापुरुषों के सान्निध्य से दूर होती है विपदाएं – आचार्य महाप्रज्ञ

–अंकित सेठिया (मीडिया सहसंयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 2 मार्च : अध्यात्म के गूढ़ रहस्यों के ज्ञाता आचार्य महाप्रज्ञ ने कल्याण मंदिर स्तोत्र पर प्रवचन करते हुए कहा कि महापुरुषों के सम्पर्क में आने से विपदाएं दूर होती है। शांतिपूर्ण वातावरण और तैजस्वी, पवित्र आभामण्डल में पहुंचने पर व्यक्ति सारी समस्याओं को भूल जाता है। अनेक ऐसे प्रसंग मैंने देखें हैं। जब आचार्य तुलसी के पास कोई समस्याओं को लेकर आता तो वह उनके सान्निध्य में पहुंचकर अपनी सारी समस्याओं को भूल कर शांति का अनुभव करता। उन्होने कहा कि ज्ञान की दृष्टि से मस्तिष्क और उपासना की दृष्टि से चरणों का बहुत महत्व है। चरणों से असीम उर्जा का बहाव होता है। जिस व्यक्ति के चरण साधना से पवित्र हो जाते है और उससे पवित्र उर्जा निकलती है उन चरणों में मस्तिष्क टिकाने से सारी समस्याएं समाहित हो जाती है। ऐसे चरण कल्याणकारी होते हैं। इसीलिए प्राचीन समय में मूर्ति की जगह चरणों को स्थापित किया जाता था। चरणों से निकलने वाली उर्जा बहुत शक्तिशाली होती है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन दिगम्बर सम्प्रदाय के आचार्य विद्यानन्दजी की स्वाध्यायपरता का उल्लेख करते हुए कहा कि उर्जा नकारात्मक और सकारात्मक दोनों प्रकार की होती है। जो व्यक्ति नकारात्मक प्रकंपनो को सकारात्मक प्रकंपनों से पराभूत कर देता है वह सफल बन सकता है। उन्होने कहा कि उपासना भक्ति, ध्यान और चरित्र ये चारों महत्पूर्ण शब्द है। चरित्र बल को बढ़ाने के लिए उपासना और भक्ति की जरुरत होती है। उपासना का मतलब है पवित्र आत्मा के निकट बैठना। उपवास किया जाता है, पर उसके मर्म को कोई नहीं जानते। अगर उपवास करते हैं और राग–द्वेष को बढ़ाने वाले कार्य में समय व्यतीत कर देते हैं तो वह उपवास नहीं लंघन होता है। उपवास का मतलब है आत्मा के पास रहना। इससे पूर्व युवाचार्य महाश्रमण ने गीता और उत्तराध्ययन पर तुलनात्मक प्रवचन में कहा कि सत्य, मधुर, और हितकर वचनों का प्रयोग करना चाहिए। जिसके ह्रदय में सत्य होता है वहां भगवान स्वयं विराजित होते हैं। उन्होने जैनवाड़मय में बताये गये स्वाध्याय के महत्व को उजागर करते हुए कहा कि स्वाध्याय से ज्ञान का आलोक मिलता है। ज्ञान की नौका में बैठकर पाप को तर सकते हैं। उन्होने कहा कि अनावश्यक न बोलना भी वाणी का संयम है।

जैन विद्या कार्यशाला सम्पन्न

आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा आयोजित जैन विद्या कार्यशाला का समापन हुआ। सोहनलाल, विजयराज, रणजीत कुमार डागा के प्रायोजकत्व में आयोजित इस कार्यशाला में मुनि दिनेशकुमार, मुनि अर्हत् कुमार, मुनि कुमारश्रमण, मुनि पीयूष कुमार, मुनि योगेश कुमार, मुनि अक्षयप्रकाश, मुनि अभिजीत कुमार ने आत्म कर्तृत्ववाद, सृष्टिवाद, अनेकांतवाद आदि जैन दर्शन के अनेक विषयों पर प्रकाश डाला। इस कार्यशाला में भाग लेने वाले 60 संभागियों ने अंतिम दिन आयोजित परीक्षा में सहभागिता दर्ज करवाई। इसमें मनीषा सेठिया प्रथम, श्रीमति मधुदेवी मालु, पुष्पादेवी मणोत द्वितीय एवं सरोज देवी मालु, सुखमाल देवी श्यामसुखा तृतीय स्थान पर रही। कार्यशाला को सफल बनाने में स्थानीय तेयुप के अध्यक्ष के.एल. जैन, मंत्री रविन्द्र गोलछा आदि कार्यकर्ताओं की शक्ति एवं समय नियोजित हुआ।

अंकित सेठिया
मीडिया संयोजक/सहसंयोजक